कर्मयोग (कर्मके माध्यमसे ईश्वरप्राप्ति) : खण्ड ३

पुण्य-पाप के प्रकार एवं उनके परिणाम

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

मई २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९६ लाख ६९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

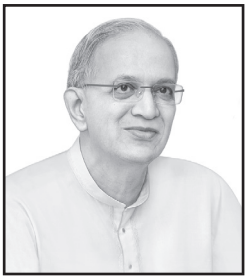

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १५.५.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५८ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

१. कर्मके परिणाम ८

१ अ. सुख एवं दुःख १ आ. संस्कार ८

१ इ. पाप-पुण्य १ ई. विवरण एवं अनुभवजन्य ज्ञान ९

१ उ. अहंभाव अथवा हीन भावना ९

२. पुण्य १०

२ अ. व्याख्या १०

२ आ. पुण्य मिलनेके कारण ११

२ इ. पूर्वपुण्यके कारण प्राप्त होनेवाली बातें १३

२ ई. अपराधीका पुण्य बलवान रहनेतक उसे दण्ड न मिलना १४

२ उ. पुण्य न मिलना १४

२ ऊ. पुण्यके प्रकार - शुद्ध पुण्य एवं अशुद्ध पुण्य १५

२ ए. खरा पुण्यवान २ ऐ. पुण्यका परिणाम १६

२ ओ. पुण्यकी मात्राके अनुसार प्राप्त होनेवाले स्वर्गके प्रकार १७

२ औ. पुण्य जला देनेवाली बातें १७

२ अं. पुण्य समाप्त होनेके लक्षण १८

२ क. साधना कर पुण्य बढानेका महत्त्व १९

२ ख. नामजपका पुण्य अन्योंको अर्पित कर पाना २२

२ ग. पुण्यका फल ईश्वरको अर्पण करनेके लाभ २२

२ घ. पुण्यकर्म गुप्त रखें २२

३. पाप २३

३ अ. व्याख्या – कर्मयोगानुसार, भक्तियोगानुसार, ज्ञानयोगानुसार २३

३ आ. मनुष्यद्वारा पाप होना २३

३ इ. व्यवहारमें पापसे बचना असम्भव २३

३ ई. पापके साक्षी ३ उ. पापके कारण २४

३ ऊ. पापके प्रकार ३१

३ ए. पापका फल (कर्मविपाक) ३४

३ ऐ. पापकी तीव्रतानुसार मृत्यु पश्चातके भोग व मिलनेवाला जन्म ४८

३ ओ. अन्योंपर पापका परिणाम ६४

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियोंने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओंमें भविष्य लिख रखा है । इन जीवनाडी-पट्टिकाओंके वाचनके माध्यमसे महर्षि सनातन संस्थाका मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहलेके लेखन में अथवा अब भी साधकोंद्वारा दिए लेखनमें उन्होंने 'प.पू.' अथवा 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है।

भूमिका

जीवन कर्ममय है । कर्मफल अटल है । अच्छे कर्मका फल पुण्य है तथा उससे सुख प्राप्त होता है, जबकि दुष्कर्म कर्मका फल पाप है एवं उससे दुःख मिलता है । हम देखते हैं कि अनेक बार 'सदाचरणी होकर भी सज्जन जीवनमें दुःख भोगते हैं, जबकि गुण्डे, भ्रष्टाचारी आदि दुर्जन अनेक दुष्कृत्य करनेके उपरान्त भी ऐश्वर्यादि सुखका उपभोग करते हैं ।' तब 'दुर्जनोंको उनके पापोंका फल क्यों नहीं मिलता ?', यह प्रश्न किसीके भी मनमें उत्पन्न हो सकता है। पूर्वजन्मोंके पुण्य-संचयके कारण दुर्जनोंको सुख मिलता है; परन्तु पुण्यका भण्डार समाप्त होनेपर उनके पापकर्मोंका फल, अर्थात रोग, दरिद्रतादि दुःख एवं मृत्युके उपरांत नरकवासादि दुःख उन्हें भोगने ही पडते हैं; इससे कोई छूट नहीं सकता । अतएव पापोंका परिमार्जन करना अत्यावश्यक है । दैनिक व्यवहारमें मनुष्यसे अनजानेमें पापकर्म निरन्तर होते ही रहते हैं उदा. झाडूसे घर बुहारते समय कीडे-मकोडोंकी हत्या होना, अन्योंसे द्वेष करना आदि । संक्षेपमें, मनुष्यके लिए पापसे बचना असम्भव है । स्वयंद्वारा किए पापोंका पश्चाताप कर उन पापोंका परिमार्जन करने हेतु धर्मद्वारा बताए दण्ड स्वीकारना, 'प्रायश्चित' कहलाता है ।

इस ग्रन्थमें पाप लगने तथा न लगनेके विविध कारण, प्रायश्चित कर्म के साथ पुण्य बढानेका महत्त्व एवं पुण्य निर्माण करनेवाले कर्मोंके विषयमें सुबोध मार्गदर्शन किया है । यह ग्रन्थ पढकर पाठकोंको पाप-पुण्यकी ओर देखनेकी एक नई दृष्टि प्राप्त हो तथा पाप-पुण्यके परे जाकर आनन्दप्राप्तिके लिए सदैव साधना करनेकी प्रेरणा प्राप्त हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !

- संकलनकर्ता

(सनातनकी 'कर्मयोग' ग्रन्थमालाकी संयुक्त भूमिका 'कर्मका महत्त्व, विशेषताएं एवं प्रकार' में दी है ।)

गीताका परिचय करानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

गीताज्ञानदर्शन